1

by

UPSC : सिविल सेवा परीक्षा

GS Paper - I : INDIAN SOCIETY

Dr. S. S. Pandey

2

UPSC : सिविल सेवा परीक्षा

प्रारंभिक परीक्षा

सामान्य अध्ययन - I (200 अंक / 2 घण्टा)

सामान्य अध्ययन - II (200 अंक / 2 घण्टा) (केवल उत्तीर्ण होना आवश्यक)

मुख्य परीक्षा

A. सामान्य अध्ययन - 1000 अंक
- सामान्य अध्ययन - I (250 Mark 3Hrs.)
- सामान्य अध्ययन - II (250 Mark 3Hrs.)
- सामान्य अध्ययन - III (250 Mark 3Hrs.)
- सामान्य अध्ययन - IV (250 Mark 3Hrs.)

B. वैकल्पिक विषय - 500 अंक
- वैकल्पिक विषय प्रश्नपत्र - I (250 Mark 3Hrs.)
- वैकल्पिक विषय प्रश्नपत्र - II (250 Mark 3Hrs.)

C. निबंध (250 Mark 3Hrs.)

D. अनिवार्य विषय - 600 अंक (केवल उत्तीर्ण होना आवश्यक)
- अनिवार्य : अंग्रेजी (300 Mark 3Hrs.)
- अनिवाय : भारतीय भाषा (300 Mark 3Hrs.)

साक्षात्कार

275 अंक

3

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा - सामान्य अध्ययन

सा. अध्ययन-I (250 Marks 3 hrs.)
- भारतीय विरासत और संस्कृति, विश्व का इतिहास
- भारतीय समाज
- भारत एवं विश्व का भूगोल

सा. अध्ययन-II (250 Marks 3 hrs.)
- शासन व्यवस्था, संविधान एवं शासन प्रणाली
- सामाजिक न्याय
- अंतर्राष्ट्रीय संबंध

सा. अध्ययन-III (250 Marks 3 hrs.)
- आर्थिक विकास से संबंधित मुद्दे
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
- जैव-विविधता, पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन से संबंधित मुद्दे
- आंतरिक सुरक्षा

सा. अध्ययन-IV (250 Marks 3 hrs.)
नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा एवं अभिरूचि

4

GENERAL STUDIES
PAPER - I

भारतीय समाज
INDIAN SOCIETY

Dr. S. S. Pandey

5

GENERAL STUDIES PAPER - I (UPSC : Syllabus)

Indian Heritage and Culture, History and Geography of the World and Society

- Indian culture will cover the salient aspects of Art Forms, literature and Architecture from ancient to modern times.
- Modern Indian history from about the middle of the eighteenth century until the present- significant events, personalities, issues.
- The Freedom Struggle — its various stages and important contributors/contributions from different parts of the country.
- Post-independence consolidation and reorganization within the country.
- History of the world will include events from 18th century such as industrial revolution, world wars, redrawal of national boundaries, colonization, decolonization, political philosophies like communism, capitalism, socialism etc.— their forms and effect on the society.

6

- Salient features of Indian Society, Diversity of India.
- Role of women and women's organization, population and associated issues, poverty and developmental issues, urbanization, their problems and their remedies.
- Effects of globalization on Indian society.
- Social empowerment, communalism, regionalism & secularism.
- Salient features of world's physical geography.
- Distribution of key natural resources across the world (including South Asia and the Indian subcontinent); factors responsible for the location of primary, secondary, and tertiary sector industries in various parts of the world (including India).
- Important Geophysical phenomena such as earthquakes, Tsunami, Volcanic activity, cyclone etc., geographical features and their location-changes in critical geographical features (including water-bodies and ice-caps) and in flora and fauna and the effects of such changes.

7

Indian Society (UPSC : Syllabus)

- भारतीय समाज की मुख्य विशेषताएँ
  Salient features of Indian Society
- भारत की विविधता
  Diversity of India
- महिला एवं महिला संगठन की भूमिका
  Role of Women and women's organization
- जनसंख्या संबंधी मुद्दे
  Population and Associated Issues

8

- गरीबी एवं विकास संबंधी मुद्दे
  Poverty and Developmental Issues
- शहरीकरण, उनकी समस्याएँ एवं उनके उपाय
  Urbanization, their problems and their remedies
- वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव
  Effects of Globalization on Indian Society
- सामाजिक सशक्तिकरण, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद और धर्मनिरपेक्षता
  Social empowerment, communalism, regionalism & secularism

9

Effects of Globalization on Indian Society

Dr. S. S. Pandey

10

वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव

वैश्वीकरण
- आर्थिक संबंधों का वैश्विक विस्तार
- सामाजिक संबंधों का वैश्विक विस्तार
- सांस्कृतिक संबंधों का वैश्विक विस्तार

- भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव
- भारतीय समाज पर प्रभाव
- सामाजिक न्याय के लक्ष्य पर प्रभाव

11

वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव

भारतीय समाज पर प्रभाव

- भारतीय संस्कृति पर प्रभाव
- धर्म पर प्रभाव
- विवाह व परिवार पर प्रभाव
- जनजातीय समाज पर प्रभाव
- महिलाओं पर प्रभाव
- वृद्धों एवं बच्चों पर प्रभाव
- श्रमिक वर्ग पर प्रभाव
- किसान वर्ग पर प्रभाव
- ग्रामीण समाज पर प्रभाव
- शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव

सामाजिक न्याय के लक्ष्य पर प्रभाव

- सकारात्मक प्रभाव
- नकारात्मक प्रभाव
  - सीमांतीकरण फलतः अतिवाद (Extremism) का उद्भव एवं आंतरिक सुरक्षा को खतरा

12

भारतीय अर्थव्यवस्था

- अर्थव्यवस्था का अर्थ एवं विकास क्रम
- आर्थिक विकास का मॉडल / स्वरूप
- स्वतंत्रता पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप
- स्वतंत्रता के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप/दिशा

13

अर्थव्यवस्था का अर्थ एवं विकासक्रम

Meaning and Evolution of Economy

14

1. खाद्य संकलन एवं शिकारी अर्थव्यवस्था
   Food gathering and hunter-gatherer Economy
2. कृषि अर्थव्यवस्था
   Agricultural Economy
3. औद्योगिक अर्थव्यवस्था
   Industrial Economy

15

आर्थिक विकास का मॉडल / स्वरूप

Model of Economic Development

16

1. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था
   Capitalist Economy
2. समाजवादी अर्थव्यवस्था
   Socialist Economy
3. मिश्रित अर्थव्यवस्था
   Mixed Economy

17

स्वतंत्रतापूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप

Nature of Indian Economy before Independence

18

1. कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था
2. सरल कृषि
3. शोषण पर आधारित अर्थव्यवस्था
   - औद्योगीकरण की शुरूआत
   - अंग्रेजों की औद्योगिक नीति अंग्रेज उद्योगपतियों के पक्ष में और शोषण पर आधारित

19

स्वतंत्रता के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप / दिशा

Nature/direction of Indian Economy after Independence

20

1. कृषि अर्थव्यवस्था
2. औद्योगिक अर्थव्यवस्था
3. सामाजिक न्याय से युक्त आर्थिक विकास पर बल

Dr. S. S. Pandey

21

स्वतंत्रता के बाद व 1991 के पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था

1. महालनोबिस मॉडल (Mahalanobis Model) के आधार पर, मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy) के तहत, सामाजिक न्याय (Social Justice) से युक्त आर्थिक विकास हेतु प्रयास प्रारम्भ

22

2. लाईसेंसिंग / परमिट प्रणाली (Licensing / Permit System) के अधीन औद्योगिक विकास
3. औद्योगिक विकास एवं विनियमन अधिनियम-1951
   - क्षेत्रीय असंतुलन (Regional Imbalance) को कम करना
   - छोटे उद्यमियों (Small Entrepreneurs) को प्रोत्साहन देना
   - आर्थिक संकेन्द्रण (Economic Concentration) को रोकना (MRTP Act-1969)

23

4. कठोर श्रम कानून (Strict Labor Laws) के पालन पर बल
5. कठोर राजकोषीय नीति (Fiscal Policy) पर बल
6. बंद व्यापार व निवेश नीति (Closed Trade and Investment Policy) पर बल
   - आयात प्रतिस्थापन नीति (Import Substitution Policy)
   - FERA - 1973
   - विदेशी बैंक के प्रवेश पर रोक

24

1991 का आर्थिक सुधार / वैश्वीकरण की पृष्ठभूमि

1. महालनोबिस मॉडल के कारण सार्वजनिक क्षेत्र घाटे में
2. कठोर लाईसेंसिग प्रणाली व श्रम कानून के कारण निजी क्षेत्र का विकास बाधित

25

3. विदेशी निवेश के प्रति नकारात्मक रूख के कारण अवसंरचनात्मक विकास एवं आर्थिक विकास बाधित (Infrastructural Development and Economic Growth)

उपरोक्त स्थितियों और कुछ तात्कालिक परिस्थितियों [जैसे- आन्तरिक व विदेशी कर्ज का बढ़ जाना; रूस का विघटन एवं खाड़ी संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था एवं

26

भुगतान संतुलन पर नकारात्मक प्रभाव; दो चुनाव का खर्च, दो सरकार का गिर जाना एवं पूर्व प्रधानमंत्री (राजीव गाँधी) की हत्या के कारण आर्थिक बोझ एवं राजनीतिक अस्थिरता में वृद्धि; International Credit Rating Agency द्वारा भारत के Credit Rating को नीचे गिराना;

27

फलत: NRI द्वारा अपने जमा का तीव्र निकासी और कर्जदाताओं द्वारा कर्ज देने से इंकार आदि] के परिणमस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था संकट में।

फलत: जुलाई 1991 में भारत– IMF - World Bank के बीच Washington सहमति पर हस्ताक्षर और आर्थिक सुधार की प्रक्रिया प्रांरम्भ।

28

आर्थिक सुधार का अर्थ/स्वरूप/लक्षण

IMF एवं World Bank के निर्देशों के अनुसार भारतीय अर्थव्यस्था के स्वरूप में किये गये परिर्वतन को आर्थिक सुधार/वैश्वीकरण की संज्ञा दी जाती है, जो मुख्यत: दो सिद्धान्तों पर आधारित है:–

29

- स्थिरीकरण का सिद्धान्त (Theory of Stabilization) (IMF)
  1. मुद्रास्फीति (Inflation) को रोकने पर बल
  2. राजकोषीय समायोजन एवं बजट घाटा कम (Fiscal Adjustment and Reduced Budget Deficit) करने पर बल
  3. भुगतान संतुलन (Balance of Payments) को अनुकूल बनाने पर बल

30

- संरचात्मक समायोजन का सिद्धान्त (Theory of Structural Adjustment) (WB)
  1. व्यापार व पूँजी प्रवाह (Trade and Capital Flows) को तीव्र करने पर बल
  2. औद्योगिक नियंत्रण को समायोजित कर निजीकरण को प्रोत्साहन
  3. सार्वजनिक क्षेत्र में सुधार पर बल

Dr. S. S. Pandey

31

4. बैंकिंग क्षेत्र में सुधार पर बल (नरसिंहम् समिति)

इस प्रकार उपरोक्त आर्थिक सुधार में तीन तत्व केन्द्रीय रहें-

1. उदारीकरण (Liberakusation)
2. निजीकरण (Privatisation)
3. वैश्वीकरण (Globalisation)

32

1991 के आर्थिक सुधार के प्रमुख प्रभाव

1. राज्य के हस्तक्षेप में कमी व निजीकरण पर बल के कारण ढेर सारी देशी व विदेशी निजी कंपनीयों का भारत के आर्थिक एवं औद्योगिक क्षेत्र में प्रवेश तथा औद्योगीकरण तीव्र एवं विकास तीव्र (Rapid Industrialization and Rapid Development)

33

2. व्यावसायिक विविधता (Occupational Diversity) में वृद्धि, रोजगार के अवसर में वृद्धि, उत्पाद की मात्रा व गुणवत्ता में वृद्धि और उपभोक्ता बाजार (Consumer Market) का विकास एवं प्रतिस्पर्धा में वृद्धि

34

3. निजी कंपनियों द्वारा अपने उत्पादों को बेचने के लिए संचार साधनों का प्रयोग और महत्वाकांक्षा को बढ़ाकर उपभोक्तावादी संस्कृति (Culture of Consumer) का विकास

35

4. आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक संबंधों के वैश्विक विस्तार के कारण, पश्चिमी संस्कृति (Western Culture) का प्रसार, मास संस्कृति (Mass Culture) का विकास, मॉल संस्कृति (Mall Culture) का विकास

36

5. राज्य का लोक कल्याणकारी स्वरूप (Public Welfare State) कमजोर होने से वंचित समूह का सीमांतीकरण (Marginalization of Disadvantaged Groups)

37

भू-स्थानीयकरण (Glocalization)

- भू-स्थानीयकरण का अर्थ
- भू-स्थानीयकरण का प्रभाव
- समीक्षा

38

भू-स्थानीयकरण का अर्थ

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के पश्चात् यह मान्यता विकसित हुई कि यह प्रक्रिया दुनियाँ की स्थानीय संस्कृति (Local Culture) को समाप्त कर देगी...., किन्तु व्यवहार में कुछ ऐसी प्रक्रियाएँ विकसित हुई जिन्होंने इन मान्यताओं को खारिज कर दिया..... इन्ही प्रक्रियाओं को भू-स्थानीयकरण (Glocalization) कहा गया।

39

भूमण्डलीय के साथ स्थानीय संस्कृति के मिश्रण को भूस्थानीकरण की संज्ञा दी जाती है। आज वैश्विक कंपनियाँ अन्य देशों के साथ-साथ भारतीय बाजार में अपने उत्पादों को स्थानीय संस्कृति और स्थानीय ग्राहकों के पसंद-नापसंद के अनुरूप बनाकर बेचने का प्रयास कर रही हैं और उसी के अनुरूप अपने उत्पादों का निर्माण भी कर रही हैं।

40

वहीं कुछ स्थानीय कंपनियाँ / भारतीय कंपनियाँ भी अपने उत्पादों को अन्य देशों की स्थानीय पसंद-नापसंद के अनुरूप बनाकर विदेशों में बेच रही हैं; जैसे– मैकडोनाल्ड का भारतीय व्यंजन को बेचना या नवरात्र स्पेशल थाली या बर्गर आदि को बेचना; हिन्दी पॉप, भांगड़ा पॉप रीमिक्स आदि का प्रचलन या एप्पल द्वारा अपने Iphone में भारतीय भाषाओं का प्रयोग आदि घटना भू-स्थानीयकरण का श्रेष्ठतम उदाहरण है।

41

भू-स्थानीयकरण का प्रभाव

1. इसने स्थानीय संस्कृति को संरक्षण (Preservation of Local Culture) देकर नष्ट होने से बचाया है
2. इसने वैश्वीकरणजनित पहचान के संकट (Identity Crisis) का समाधान प्रस्तुत किया है

42

3. यह एक संश्लेषित वैश्विक संस्कृति (Synthetic Global Culture) का निर्माण कर रही है
4. इससे स्थानीय संस्कृति (Local Culture) अपना मूल स्वरूप खोती (Loses its Original Form) जा रही है

43

संभावित प्रश्न

44

प्रश्न: भू-स्थानीयकरण क्या है? यह बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अपनाई गयी बाजार संबंधी रणनीति है अथवा कोई सांस्कृतिक संश्लेषण की प्रक्रिया है? चर्चा कीजिए।

45

उत्तर :

Part-I : भू-स्थानीयकरण के अर्थ की चर्चा

Part-II : बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बाजार रणनीति या सांस्कृतिक संश्लेषण की प्रक्रिया?

46

निश्चित रूप से बहुराष्ट्रीय कंपनियों (Multinational Companies) द्वारा प्रारम्भ यह प्रक्रिया उनके बाजार संबंधी रणनीति से प्रभावित है। नये बाजार के अवसर और बड़े बाजार की उपलब्धता हेतु विभिन्न तरीको से, अपने उत्पादों को भारतीय संस्कृति (Indian Culture) और यहाँ की माँग के अनुरूप बनाकर बेचने में, उसका आर्थिक हित (Economic Interests) सर्वोपरि है।

47

परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं है कि– इसमें सांस्कृतिक संश्लेषण (Cultural Synthesis) की प्रक्रिया भी साथ-साथ चल रही है। आधुनिक मूल्य, प्रौद्योगिकीय शिक्षा, सूचना व संचार (Modern Values, Technological Education, Information and Communication) के नवीन साधनों ने, भारतीय लोगों के मानसिकता को प्रभावित करके उन्हें एक नवीन बदलाव की ओर प्रेरित किया है,

48

और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम करने वाली जनसंख्या के माध्यम से, विभिन्न देशों के मध्य सांस्कृतिक संश्लेषण की प्रक्रिया को तीव्र किया है और यह स्थिति भारत में भी दृष्टिगत हो रही है।

जिससे परम्परागत भारतीय संस्कृति न केवल पुन:जीवित हुई है, बल्कि कुछ नवीन तत्वों के साथ संयुक्त होकर एक नये रूप में परिलक्षित हो रही है।

49

Dr. S. S. Pandey

Social Networking Sites
सोशल नेटवर्किंग साइट्स

50

प्रश्न: Social Networking Sites क्या हैं? इसका भारतीय जनमानस पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा कीजिए।

उत्तर: Social Networking Sites का अर्थ– Internet पर उपलब्ध ऐसे Sites जिनके माध्यम से, व्यक्तियों द्वारा

51

सामाजिक अन्तःक्रियाएँ की जाती है, सोशल नेटवर्किंग साईट कहलाता है; जैसे Facebook, Twitter, WhatsApp, Telegram आदि

52

SNS का सकारात्मक प्रभाव

1. पुनः सामाजिक जुड़ाव (Social Bonding) में वृद्धि
2. विभिन्न मुद्दों पर जन सहभागिता (People Participation) में वृद्धि
3. दबाव समूह (Pressure Group) के रूप में क्रियाशील

53

4. स्थानीय समस्याओं का सार्वभौमिकरण (Universalisation of Local Problems)
5. अलगाव व एकाकीपन (Isolation and Loneliness) को दूर करने का एक मात्र माध्यम
6. विचार, सूचना तथा ज्ञान (Ideas, Information and Knowledge) का तीव्रता से फैलाव का माध्यम
7. विवाह संबंधों में सहयोगी

54

SNS का नकारात्मक प्रभाव

1. निजता का संकट (Privacy Crisis)
2. विभिन्न सूचनाओं, महत्वपूर्ण दस्तावेजों, फोटो, आदि की सुरक्षा खतरे में
3. नवीन प्रकार के अपराध (साईबर क्राईम) और पुराने अपराध में सहायक होकर, आन्तरिक सुरक्षा को चुनौती

55

4. समाज विरोधी गतिविधियों एवं अपवाहों को फैलाकर सामुदायिक सौहार्द्रता को चुनौती (असम हिंसा)
5. आतंकवादी गतिविधियों में सहायक होकर आंतरिक सुरक्षा को चुनौती (ISIS)

56

6. अश्लीलता (Obscenity) में वृद्धि (Porn Sites etc.)
7. पश्चिमी संस्कृति (Western Culture) के प्रसार द्वारा भारतीय संस्कृति (Indian Culture) के समक्ष संकट

57

समीक्षा

निश्चित रूप से Social Networking Sites तकनीकीकरण एवं वैश्वीकरण (Technologization and Globalization) की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो भारतीय समाज को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित कर रही हैं।

58

चूँकि हम निरन्तर आधुनिक समाज के निर्माण की ओर अग्रसर है, इसलिए इस तरह के Sites को रोकना उपयुक्त नहीं है।

59

तथापि इसको नियंत्रित करके और भारतीय समाज एवं संस्कृति (Indian Society and Culture) के साथ समायोजित करके, इसके नकारात्मक प्रभावों से बचा जा सकता है और इसको भारतीय संस्कृति हेतु अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है।

60

संभावित प्रश्न

Dr. S. S. Pandey

61

प्रश्न : वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने हमारी सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था के समक्ष एक नवीन चुनौती को प्रस्तुत किया है। चर्चा कीजिए।

उत्तर :

Part-I : भूमिका– शुरूआत

Part-II : भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का चुनौतीपूर्ण प्रभाव

62

परिवार का विघटन

- संयुक्त परिवार का विघटन
- संयुक्तता की भावना का ह्रास
- परिवार के प्रकार्य (Function) में कमी

63

विवाह संस्था पर प्रभाव

- विवाह-विच्छेद की दर में वृद्धि
- यौन-संबंधों में खुलापन फलतः यौन नैतिकता का ह्रास
- Live in Relation में वृद्धि
- समलैंगिकता का प्रचलन
- अविवाहित रहने की प्रवृति का विकास
- विवाह का बाजारीकरण

64

जाति व्यवस्था पर प्रभाव

- परम्परागत जजमानी व्यवस्था कमजोर
- जाति का संस्कारागत पक्ष कमजोर
- पेशेवर जातियों की परम्परागत कौशल विलुप्त

65

धर्म पर प्रभाव

- धर्म का आध्यात्मिक पक्ष कमजोर
- धर्म का बाजारीकरण फलतः धर्म में निहित पवित्रता का ह्रास
- धार्मिक कट्टरतावाद में वृद्धि
- धार्मिक आतंकवाद में वृद्धि

66

समीक्षा

निश्चित रूप से वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं के समक्ष चुनौती को उत्पन्न किया है,
परन्तु यह भी सत्य है कि भारतीय परम्परा में निहित अनुकूलनशीलता, सहिष्णुता, लोचशीलता एवं आधुनिकीकरण की प्रवृत्ति ने इनकी निरन्तरता को सम्पोषित किया है, और वे नवीन परिवर्तनों के साथ आज भी बने हुए है।

67

जहाँ तक इनके नकारात्मक प्रभावों का प्रश्न है, तो यह परिवर्तन की संक्रमणकालीन अवस्था का परिणाम है, जो आधुनिकता के परिपक्व होने के साथ ही स्वतः समाप्त हो जायेगा।

68

संभावित प्रश्न

69

प्रश्नः परम्परागत रूप से सशक्त एवं सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न भारत के लिए, वैश्वीकरण के सांस्कृतिक / सामाजिक प्रभाव, कई विरोधाभासों को उत्पन्न करते हैं। चर्चा कीजिए।

70

उत्तर :

Part – I : सकारात्मक प्रभावों की चर्चा

Part – II : नकारात्मक प्रभावों की चर्चा

Part – III : समीक्षा

Dr. S. S. Pandey

71

स्पष्टतः वैश्वीकरण ने भारतीय सांस्कृतिक व्यवस्था पर विरोधाभासी परिणामों को उत्पन्न करते हुए, कई नवीन समस्याओं को जन्म दिया है, परन्तु साथ-साथ यह भी सत्य है कि– ये नकारात्मक परिणाम एक संक्रमणकालीन अवस्था (Transitional Phase) का परिणाम है।

72

जहाँ भारतीय जनमानस इस नवीनता से अपना सामंजस्य स्थापित नहीं कर पर रहा है, क्योंकि जब परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी और संतुलित होती है, तब सांस्कृतिक विघटन की संभावना कम होती है।

73

इसलिए आवश्यक है– वैश्वीकरण के कारण भारतीय संस्कृति पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को एक तरफ रोकने की और दूसरी तरफ इसके पक्ष में जनमत निर्माण की, ताकि बिना सांस्कृतिक विघटन के, आधुनिक भारतीय समाज के निर्माण को संभव बनाया जा सके।

74

प्रश्न : "वैश्वीकरण ने एक आधुनिक परन्तु अलगावित मानव का निर्माण किया है।" चर्चा कीजिए।

उत्तर :

Part-I : वैश्वीकरण द्वारा आधुनिक मानव का निर्माण (आधुनिकता के मूल्यों के प्रसार द्वारा)

75

Part-II : वैश्वीकरण द्वारा अलगावित मानव (Isolated Human) का निर्माण

- उपभोग प्रधान मनुष्य का निर्माण
- व्यक्तिवादिता में वृद्धि एवं सामूहिकता का ह्रास फलतः स्वकेन्द्रीत मनुष्य का विकास
- अत्यधिक धन के चाह के कारण व्यस्तता में वृद्धि– फलतः बच्चे, पत्नी, माँ, बाप एवं अन्य संबंधों से अलगाव

76

- Part-III : निष्कर्ष–

स्पष्ट है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने आधुनिक मानव के निर्माण के साथ-साथ मनुष्य को अपने सगे-संबंधियों से, यहाँ तक कि अपने आप से भी अलगावित किया है।

77

परन्तु सामुहिकता के नवीन मंचों, जैसे Social Networking Sites (Facebook, WhatsApp) आदि की मदद से आधुनिक संदर्भ में सामूहिक जीवन को बनाये रखने हेतु नया अवसर भी प्रदान किया है। यह भी सत्य है कि, आज आधुनिक मनुष्य पूर्णतः अलगावित नहीं है,

78

बल्कि तमाम व्यस्तताओं के बावजूद विवाह, त्यौहार आदि विभिन्न अवसरों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन भी कर रहा है।

79

प्रश्नः "वैश्वीकरण ने जहाँ एक संश्लेषित वैश्विक संस्कृति के निर्माण को संपोषित किया है, वहीं लोगों में प्रतिक्रियात्मक चेतना को उत्पन्न करके परम्पराकरण को भी बढ़ाया है।" चर्चा कीजिए।

Dr. S. S. Pandey

Secularism in India

भारत में धर्मनिरपेक्षता

1

संभावित प्रश्न

2

- भारत में धर्मनिरपेक्षता की संकल्पना एवं प्रकृति पर टिप्पणी कीजिए।
- धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। भारत में इसे किस रूप में स्वीकार किया गया है?
- भारत में धर्मनिरपेक्षता / धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया के सामाजिक प्रभावों की चर्चा कीजिए।

3

- भारत में धर्मनिरपेक्षता की समकालीन चुनौतियों को स्पष्ट कीजिए और धर्मनिरपेक्षता की प्रक्रिया को तीव्र करने हेतु सुझाव दीजिए।
- "भारत में धर्मनिरपेक्षता एक कमजोर विचारधारा है।" चर्चा कीजिए।

4

- भारत में धर्मनिरपेक्षता के सूचकों (Indicators) का वर्णन कीजिए। हाल के वर्षों में राजनीतिक दलों की कुछ एक गतिविधियों को संदर्भित करते हुए बतायें कि क्या भारत में इन सुचकों के अनुसार कार्य हो रहा है?

5

- क्या भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है? हाल में भारत में हुए धर्मनिरपेक्षता विरोधी गतिविधियों के संदर्भ में अपना उत्तर दीजिए।
- वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारत में धर्मनिरपेक्षता को एक साथ मजबूत एवं कमजोर दोनों किया है। स्पष्ट कीजिए।

6

UPSC द्वारा विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

7

- क्या सहिष्णुता, सम्मिलन एवं बहुलता मुख्य तत्व हैं जो धर्मनिरपेक्षता के भारतीय रूप का निर्माण करते हैं? तर्कसंगत उत्तरर दें।
  (250 शब्दों में उत्तर दें) UPSC - 2022

  Are tolerance, assimilation and pluralism the key elements in the making of an Indian form of secularism? Justify your answer. (Answer in 250 words) UPSC - 2022

8

- धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हमारी सांस्कृतिक प्रथाओं के सामने क्या-क्या चुनौतियाँ हैं?
  (150 शब्दों में उत्तर दें) UPSC - 2019

  What are the challenges to our cultural practices in the name of secularism (150 words) UPSC - 2019

9

- धर्मनिरपेक्षतावाद की भारतीय संकल्पना, धर्मनिरपेक्षतावाद के पाश्चात्य मॉडल से किन-किन बातों में भिन्न है? चर्चा कीजिए।
  (150 शब्दों में उत्तर दें) UPSC - 2018

  How the Indian concept of secularism is different from the western model of secularism? Discuss. (Answer in 150 words) UPSC - 2018

10

11

- धर्मनिरपेक्षता पर भारतीय वाद-विवाद, पश्चिम में वाद-विवादों से किस प्रकार भिन्न हैं? (200 शब्दों में उत्तर दें) UPSC - 2014

How do the Indian debates on secularism differ from the debates in the West? (Answer in 200 words) UPSC - 2014

12

- 'धर्म तथा नृजातीय हिंसा की राजनीति मूलतः धर्मनिरपेक्षवाद तथा धर्मनिरपेक्षीकरण की राजनीति है।' कथन का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। UP PSC - 2019

'The politics of religion and ethnic violence is basically the politics of secularism and secularisation.' Critically analyse the statement. UP PSC - 2019

13

- धर्मनिरपेक्षतावाद की भारतीय संकल्पना, धर्मनिरपेक्षतावाद के पाश्चात्य मॉडल से किन-किन बातों में भिन्न है? चर्चा कीजिए। UP PSC - 2018

How the Indian concept of secularism is different from the western model of secularism? Discuss. UP PSC - 2018

14

- "धर्मनिरपेक्षतावाद अभिमुखन व व्यवहार के एक समुच्चय के रूप में उदारवादी लोकतान्त्रिक भारत के भविष्य के लिए अपरिहार्य है" विवेचना कीजिए। UP PSC - 2018

"Secularism as an orientation and a set of practices is indispensable to India's future as a liberal democracy." Discuss. UP PSC - 2018

15

Dr. S. S. Pandey

भारत में साम्प्रदायिकता

Communalism in India

16

संभावित प्रश्न

17

- भारत में साम्प्रदायिकता की समस्या को दर्शाइए। इसने किस प्रकार सामाजिक सौहार्द्रता को कमजोर किया है? स्पष्ट कीजिए।
- भारत में साम्प्रदायिकता के धर्मनिरपेक्षता विरोधी रूपों की चर्चा कीजिए और भारत में धर्मनिरपेक्षता को सफल बनाने हेतु उपाय सुझाइए।

18

- भारत में साम्प्रदायिकता के उन्मूलन हेतु किये गए प्रयासों की समीक्षा कीजिए और इस दिशा में उपयुक्त सुझाव दीजिए।
- भारत में साम्प्रदायिकता के उद्भव एवं विकास हेतु वैश्वीकरण की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

19

- "यद्यपि साम्प्रदायिकता धर्म से गहरे रूप से जूड़ी प्रतीत होती है, परन्तु साम्प्रदायिकता का मूल सरोकार राजनीति से है, धर्म से नहीं।" चर्चा कीजिए।

20

UPSC द्वारा विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

- संजातीय पहचान एवं सांप्रदायिकता पर उत्तर-उदारवादी अर्थव्यवस्था के प्रभाव की विवेचना कीजिए।
(250 शब्दों में उत्तर दें) UPSC - 2023

Discuss the impact of post-liberal economy on ethnic identity and communalism.
(Answer in 250 words) UPSC - 2023

21

- 'सांप्रदायिकता या तो शक्ति संघर्ष के कारण उभर कर आती है या आपेक्षिक वंचन के कारण उभरती है।' उपयुक्त उदाहरणों को प्रस्तुत करते हुए तर्क दीजिए।
(250 शब्दों में उत्तर दें) UPSC - 2018

'Communalism arises either due to power struggle or relative deprivation.' Argue by giving suitable illustration.
(Answer in 250 words) UPSC - 2018

22

- स्वतंत्र भारत में धार्मिकता किस प्रकार साम्प्रदायिकता में रूपांतरित हो गयी, इसका एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए धार्मिकता एवं साम्प्रदायिकता के मध्य विभेदन कीजिए।
(250 शब्दों में उत्तर दें) UPSC - 2017

Distinguish between religiousness/religiosity and communalism giving one example of how the former has got transformed into the latter in independent India. (Answer in 250 words) UPSC - 2017

23

Dr. S. S. Pandey

धार्मिक रूढ़िवाद

Religious Fundamentalism

24

धार्मिक रूढ़िवाद / Religious Fundamentalism

- धार्मिक रूढ़िवाद का अर्थ
- धार्मिक रूढ़िवाद का दुष्परिणाम
- मूल्यांकन एवं सुझाव
- धार्मिक रूढ़िवाद के लक्षण
- धार्मिक रूढ़िवाद का कारण

25

धार्मिक रूढ़िवाद का अर्थ

Meaning of Religious Fundamentalism

26

किसी धर्म की मान्यताओं के प्रति उस धर्म के अनुयायियों का अंधलगाव जहाँ वह अनुयायी अन्य धर्म के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण एवं उग्रता का प्रदर्शन करता है

27

धार्मिक रूढ़िवाद के लक्षण

Characteristics of Religious Fundamentalism

28

1. किसी धर्म की मान्यताओं में धर्मान्धता की सीमा तक विश्वास / प्रतिबद्धता
2. अपने ही धर्म के संदर्भ में सारी दुनियाँ को देखने की प्रवृत्ति

29

3. अपने परंपरागत धर्म को अंतिम सत्य के रूप में स्थापित करने का प्रयास
4. अपने धर्म से अलग समस्त जीवन शैली को भ्रष्ट मानते हुए उसके शुद्धिकरण का प्रयास
5. अपने धार्मिक विश्वास में धर्मांध एवं स्वरूप में आक्रामक

30

31

6. इसमें धार्मिक विश्वास मुख्यत: स्वयं का मत, जिसका धर्म में विद्यमान होना आवश्यक नहीं, जिसे रूढ़िवादी धर्म की पुर्नव्याख्या द्वारा धर्मसम्मत सिद्ध कर देते हैं
7. इसमें विज्ञान एवं विवेकवाद दोनों को अस्वीकार किया जाता है

32

धार्मिक रूढ़िवाद का दुष्परिणाम

Consequences of Religious Fundamentalism

33

1. सांप्रदायिक तनाव एवं संघर्ष में वृद्धि फलत: सामुदायिक सौहार्द्रता व राष्ट्रवाद की भावना कमजोर
2. विवेकसम्मत एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विरोध फलत: धर्मनिरपेक्षीकरण एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया बाधित / धीमी
3. धार्मिक आतंकवाद का उद्‌भव
4. समकालीन विश्व की शांति व्यवस्था भंग

34

धार्मिक रूढ़िवाद का कारण

Causes of Religious Fundamentalism

35

1. धर्म आधारित नृजातीयकेन्द्रीयता (Ethnocentrism) की भावना एवं इसकी प्रतिक्रिया
2. रूढ़िवादी व्यक्तियों एवं संगठनों की नकारात्मक भूमिका
3. विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा सत्ता प्राप्ति हेतु जनता को लामबंद करने हेतु इसका प्रयोग

36

4. राष्ट्रवाद के विकास के लिए धर्म का प्रयोग
5. वैश्वीकरणजनित पहचान का संकट (Identity Crisis) एवं इसके समाधान हेतु लोगों द्वारा धर्म की ओर उन्मुखता में वृद्धि
6. विभिन्न व्यक्तियों एवं समाज के लोगों के द्वारा संगठन या दबाव समूह (Pressure Group) के आधार के रूप धर्म का प्रयोग

37

मूल्यांकन एवं सुझाव

Evaluation and Suggestions

38

1. तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Rational and Scientific Approach) का अधिकाधिक प्रसार किया जाए
2. धर्मनिरपेक्षता को एक मजबूत विचारधारा के रूप में स्थापित किया जाए
3. सभी धर्मों को अधिकाधिक तार्किक एवं व्यवहारिक (Rational and Practical) बनाया जाए (धर्म का धर्मनिरपेक्षीकरण)

39

4. विभिन्न धार्मिक समुदायों (Religious Communities) के मध्य सांस्कृतिक अंत:क्रिया को प्रोत्साहित कर उन्हें एक-दूसरे के निकट लाया जाए
5. विभिन्न धार्मिक समुदायों के मध्य विद्यमान विषमता को समाप्त किया जाए

40

6. धर्मांध लोगों एवं संगठनों तथा राजनीतिक दलों की समाज विरोधी गतिविधियों को हतोत्साहित किया जाए
7. संचार साधनों, NGO's एवं युवाओं को इस दिशा में सकारात्मक भूमिका निर्वहन हेतु प्रेरित किया जाए

संभावित प्रश्न

41

- भारत में धार्मिक कट्टरतावाद की समस्याओं की चर्चा कीजिए और धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया पर इसके प्रभावों को दर्शाएं।
- भारत में वैश्वीकरण के परिणाम के रूप में धार्मिक कट्टरतावाद पर चर्चा कीजिए?

42

- हाल के वर्षों में भारत में धार्मिक कट्टरतावाद ने साम्प्रदायिकता की समस्या को तीव्र किया है, चर्चा कीजिए।
- समकालीन भारतीय समाज में धार्मिक कट्टरतावाद ने आतंकवाद को संपोषित करके आन्तरिक सुरक्षा के समक्ष चुनौती प्रस्तुत कर रहा है। चर्चा कीजिए।

43

- समकालीन भारत में धार्मिक कट्टरतावाद का उद्भव आधुनिकीकरण की वर्तमान प्रक्रिया पर प्रश्न चिह्न खड़ा करता है। स्पष्ट कीजिए।
- धार्मिक कट्टरतावाद के नकारात्मक परिणाम का समाधान उसी आधुनिकता से संभव है जिसके विरोध में इसका उद्भव हुआ है। चर्चा कीजिए।

44

Dr. S. S. Pandey

धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद

Religious Revivalism

45

धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद / Religious Revivalism

- धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद का अर्थ
- धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद के लक्षण
- धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद के सामाजिक परिणाम
- धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद के कारण
- समीक्षा एवं निष्कर्ष

46

धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद का अर्थ

Meaning of Religious Revivalism

47

सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में धर्म के प्रभाव एवं प्रचलन में पुन: वृद्धि

48

धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद का लक्षण

Characteristic of Religious Revivalism

49

1. सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में धर्म एवं धार्मिक मान्यताओं के प्रभाव एवं प्रचलन में पुन: वृद्धि
2. परंपरागत धार्मिक मान्यताओं एवं विश्वासों के अनुपालन पर जोर फलत: धर्म, पूजापाठ आदि के प्रचलन में वृद्धि

50

51

3. राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक (Political, Economic and Social) घटनाओं का धार्मिक विश्लेषण

4. एक तटस्थ अवधारणा जो मानव समाज हेतु प्रकार्यकारी एवं दुष्प्रकार्यकारी (Functional and Dysfunctional)

56

5. विभिन्न धार्मिक चैनलों द्वारा प्रसारित कार्यक्रम, धार्मिक धारावाहिक एवं सिनेमा तथा धार्मिक संस्थाओं द्वारा संचालित कार्यक्रमों से लोगों को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने एवं नैतिकता को सुदृढ़ करने में सहायक

52

धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद के सामाजिक परिणाम

Social Consequences of Religious Revivalism

57

6. परंपरा के कुछ महत्वपूर्ण एवं प्रकार्यात्मक पक्षों को पुनः प्रचलन में लाकर मानवता की सेवा (भारत में बाबा रामदेव द्वारा योगा, आयुर्वेद आदि का प्रचलन)

53

सकारात्मक परिणाम (Positive Results)

1. व्यक्ति के पहचान के रूप में स्थापित होकर वैश्वीकरणजनित पहचान के संकट के समाधान में सहायक

2. परंपरागत धार्मिक मान्यताओं के प्रसार द्वारा तीव्र सामाजिक परिवर्तन पर नियंत्रण लाकर सामाजिक विघटन (Social Disintegration) को रोकने में सहायक

58

नकारात्मक परिणाम

Negative Consequences

1. परंपरागत धार्मिक मान्यताओं के प्रति लोगों के भावनात्मक (Emotional) लगाव को बढ़ावा देकर लोगों के बीच रूढ़िवाद को बढ़ावा

54

3. विभिन्न धार्मिक संगठनों (Religious Organizations) के द्वारा मानवता की सेवा करके तथा इस दिशा में अनेक कार्यों का सम्पादन करके नवउदारवाद (Neoliberalism) के वर्तमान दौर में लोक कल्याणकारी राज्य के विकल्प के रूप में क्रियाशील

59

2. रूढ़िवादी धार्मिक मान्यताओं एवं अतार्किक विचारों (Orthodox Religious beliefs and Irrational Ideas) का प्रचार-प्रसार करके मनुष्य की मानसिक गतिशीलता में बाधक तथा आधुनिकीकरण एवं नवाचार (Modernization and Innovation) का विरोध

55

4. व्यक्ति को भावनात्मक सहारा प्रदान करके, आधुनिक उपभोक्तावादी समाज में उत्पन्न निराशा, तनाव एवं कुण्ठा (Stress and Frustration) से मुक्ति प्रदान करने में सहायक

60

3. लोगों में अपनी धार्मिक मान्यताओं के प्रति अंधलगाव को बढ़ाकर साम्प्रदायिकता (Communalism) के विकास में सहायक

4. अतार्किक एवं रूढ़िगत (Irrational and Conservative) मान्यताओं को फिर से प्रचलन में लाकर धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया का विरोध

धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद के कारण

Causes of Religious Revivalism

61

1. वैश्वीकरणजनित पहचान का संकट
2. विभिन्न धार्मिक संगठनों एवं नेताओं द्वारा धार्मिक मान्यताओं का प्रचार-प्रसार
3. राजनीतिक दलों एवं व्यक्तियों द्वारा मतों को लामबंद करके जनसमर्थन प्राप्ति हेतु धर्म का प्रयोग

62

4. धार्मिक रूढ़िवाद
5. धर्म का बाजारीकरण
6. सूचना एवं प्रचार के साधनों का विकास / सूचना क्रांति
7. धर्म के समकालीन प्रकार्य / लाभ

63

संभावित प्रश्न

64

- भारत में धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया पर धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद के प्रभावों की चर्चा कीजिए?
- क्या आप सहमत है कि धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद आधुनिक भारतीय समाज के निर्माण में अवरोधक है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए?

65

- धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद के उद्भव के बीज आधुनिकीकरण की असफलताओं में छिपे हुए है। चर्चा कीजिए?

66

Dr. S. S. Pandey

भारत में धर्म का राजनीतिकरण

Politicization of Religion in India

67

भारत में धर्म का राजनीतिकरण
Politicization of Religion in India

- धर्म का राजनीतिकरण का अर्थ
- भारत में धर्म का राजनीतिकरण का स्वरूप
- भारत में धर्म का राजनीतिकरण का लाभ
- भारत में धर्म का राजनीतिकरण की हानि
- समीक्षा

68

धर्म का राजनीतिकरण का अर्थ

Meaning of Politicization of Religion

69

राजनीतिक दलों द्वारा राजनीतिक हितों की पूर्ति हेतु धर्म के प्रयोग को, धर्म का राजनीतिकरण (Politicization of Religion) कहते हैं

70

71

धर्म का राजनीतिकरण का स्वरूप

Form of Politicization of Religion

72

1. धर्म के आधार पर राजनीतिक दलों (Political Parties) का निर्माण
2. धार्मिक आधार पर टिकट का बंटवारा
3. मंत्रिमंडल के निर्माण में धर्म को ध्यान में रखना

73

4. चुनावी फायदे के लिए मतों को लामबंद करने हेतु धर्म का प्रयोग
5. सरकार द्वारा नीतियों को निर्मित करते समय किसी धर्म विशेष का तुष्टिकरण (Appeasement)

74

भारत में धर्म का राजनीतिकरण के लाभ

Functions of Politicization of Religion in India

75

1. अल्पसंख्यकों के हितों का संरक्षण
2. अल्पसंख्यकों की राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित
3. अल्पसंख्यकों की रक्षा एवं भय से मुक्ति
4. शक्ति के विकेन्द्रीकरण (Decentralization of Power) द्वारा लोकतंत्र मजबूत

76

भारत में धर्म का राजनीतिकरण की हानि

Dysfunctions of Politicization of Religion in India

77

1. धार्मिक कट्टरतावाद को बढ़ावा तथा सांप्रदायिक तनाव एवं हिंसा (Communal Tension and Violence) में वृद्धि
2. धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया कमजोर
3. बहुसंख्यकों की प्रतिक्रिया में वृद्धि एवं उनका सांप्रदायीकरण

78

4. भारतीय संविधान की भावना के विपरीत फलतः लोकतंत्र कमजोर
5. उपरोक्त के परिणामस्वरूप विकास की प्रक्रिया बाधित

79

संभावित प्रश्न

80

- "राजनीतिकरण से धर्म का पुनः पृथक्करण, धर्म के राजनीतिकरण से उत्पन्न समस्याओं का अस्थायी समाधान है।" इससे आप कहाँ तक सहमत है? उत्तर दीजिए।
- "धर्म का राजनीतिकरण, सामान्यतः नकारात्मक अर्थों में रूढ़ हो गया है, परन्तु इसके कई सकारात्मक परिणामों ने लोकतंत्र को मजबूत भी किया है।" स्पष्ट कीजिए।

Dr. S. S. Pandey

भारत में धर्म का बाजारीकरण
Commercialization of Religion in India

81

भारत में धर्म का बाजारीकरण
Commercialization of Religion in India

- धर्म के बाजारीकरण का अर्थ
- भारत में धर्म के बाजारीकरण का लाभ
- समीक्षा
- भारत में धर्म का बाजारीकरण का स्वरूप
- भारत में धर्म के बाजारीकरण की हानि

82

धर्म के बाजारीकरण का अर्थ
Meaning of Commercialization of Religion

83

बाजार की शक्तियों द्वारा, लाभ की प्राप्ति हेतु धर्म को बाजार के वस्तु के रूप में प्रयोग, धर्म का बाजारीकरण कहलाता है।

84

भारत में धर्म का बाजारीकरण के स्वरूप
Nature of Commercialization of Religion in India

85

1. विभिन्न धार्मिक चैनल का उद्भव और धार्मिक कार्यक्रमों का प्रसारण
2. धार्मिक कथाओं पर आधारित फिल्म, धारावाहिक, कार्टून-शो आदि का निर्माण एवं प्रसारण
3. भजन एवं धार्मिक प्रवचन का व्यवसायीकरण

86

4. धार्मिक सेवा का व्यवसायीकरण एवं पूजा सामग्री (Commercialization of Religious Services and Puja Materials) का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

(मैकडोनाल्ड जैसी कंपनियों द्वारा नवरात्र बर्गर एवं नवरात्र थाली की बिक्री)

(इंटरनेट के माध्यम से पूजा में भाग लेना एवं प्रसाद की प्राप्ति)

87

भारत में धर्म के बाजारीकरण का लाभ
Benefits of Commercialization of Religion in India

88

1. धर्म के सकारात्मक पक्षों का पुनः प्रचलन और इनसे भारतीय समाज लाभान्वित
2. धर्म आधारित परम्परागत असमानता में कमी और धर्म की सर्वसुलभता
3. व्यक्तिवाद के बढ़ते दौर में, धर्म आधारित नैतिकता का विकास
4. उपभोक्तावादजनित तनाव, कुंठा (Stress, Frustration) आदि से मुक्ति में सहायक

89

भारत में धर्म के बाजारीकरण की हानि
Disadvantages of Commercialization of Religion in India

90

1. धर्म के मूल पक्षों का गौण होना और धर्म में दिखावा पर जोर

2. धर्म में धन की भूमिका में वृद्धि और धार्मिक संस्थानों में विषमता में वृद्धि

91

3. ढेर सारे बाबाओं एवं पंडितों का उद्भव और धर्म के नाम पर शोषण

4. धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद एवं धार्मिक कट्टरतावाद- फलतः धर्म निरपेक्षीकरण की प्रक्रिया बाधित

92

संभावित प्रश्न

93

- “बाजार ने, विज्ञान एवं आधुनिकता से आहत धर्म को, विज्ञान एवं आधुनिक संसाधनों का प्रयोग करके नवजीवन प्रदान किया है परन्तु धर्म को इनकी कीमत, अपने मूल स्वरूप को खोकर चुकानी पड़ी है।” स्पष्ट कीजिए।

94

Dr. S. S. Pandey

भारत में विवाह एवं परिवार पर वैश्वीकरण का प्रभाव

Impact of Globalization on Marriage and Family in India

95

संभावित प्रश्न

96

- आधुनिकीकरण एवं वैश्वीकरण के विशेष संदर्भ में हिन्दू विवाह में हो रहे आधुनिक परिवर्तनों की चर्चा कीजिए। इसके लिए कौन-कौन से कारण उत्तरदायी रहे हैं?

97

- 'हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार है' वर्तमान संदर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिए और इस कथन के प्रकाश में हिन्दू विवाह में होने वाले नवीन परिवर्तनों को दर्शाइए।

98

- भारतीय संयुक्त परिवार में होने वाले समकालीन परिवर्तनों को दर्शाइए। क्या आप सहमत है कि ये परिवर्तन संयुक्त परिवार के केवल घरेलू आयाम (Household Dimension) में परिवर्तन है? उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।

99

- “संयुक्त परिवार से एकाकी परिवार और एकाकी परिवार से संयुक्त परिवार में परिवर्तन की प्रक्रिया भारतीय समाज में ऐतिहासिक रूप से विद्यमान रही है” (Family Cycle) इस कथन के प्रकाश में संयुक्त परिवार में होने वाले समकालीन परिवर्तनों पर चर्चा कीजिए।

100

101

- "भारत के संयुक्त परिवार में परिवर्तन केवल घरेलू आयामों में परिवर्तन को परिलक्षित करता है और संयुक्तता की भावना के साथ संयुक्त परिवार आज भी बना हुआ है।" चर्चा कीजिए।

102

- "भारतीय एकाकी परिवार औद्योगीकरण का उत्पाद है।" इस कथन के प्रकाश में संयुक्त परिवार में होने वाले आधुनिक परिवर्तन के कारणों की चर्चा कीजिए।
- "भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने विवाह एवं परिवार संस्था को कमजोर किया है।" चर्चा कीजिए।

103

- "वैश्वीकरण ने जहाँ एक तरफ व्यक्ति को स्वतंत्रता एवं स्वच्छंदता प्रदान की है वहीं दूसरी तरफ विवाह एवं परिवार के समक्ष चुनौती को भी प्रस्तुत किया है।" चर्चा कीजिए।

104

UPSC द्वारा विगत वर्ष में पूछे गए प्रश्न

105

- क्या आप सोचते हैं कि, आधुनिक भारत में विवाह एक संस्कार के रूप में अपना मूल्य खोता जा रहा है? UPSC - 2023

Do you think marriage as a sacrament is loosing its value in Modern India? UPSC - 2023

106

- पारिवारिक सम्बन्धों पर 'वर्क फ्रॉम होम' के असर की छानबीन तथा मूल्यांकन करें। (150 शब्द में उत्तर दें) UPSC - 2022

Explore and evaluate the impact of 'Work From Home' on family relationships. (Answer in 150 words) UPSC - 2022

107

- संयुक्त परिवार का जीवन-चक्र सामाजिक मूल्यों के बजाय आर्थिक कारकों पर निर्भर करता है, चर्चा कीजिए। UPSC - 2014

The life cycle of a joint family depends on economic factors rather than social values, Discuss. UPSC - 2014